जब ढोल ने गीत गाया

अफ़्रीकी लोककथा

एक दिन एक नन्हीं लड़की जिसका नाम सिल्ने था नदी से पानी लाने गई. अपने बड़े मटके को भरने के लिए वह धीरे-धीरे उसमें पानी उंडेल रही थी. पानी भरते-भरते वह गाना गाने लगी. गाना इतना मधुर था कि उसके आसपास सब जानवर, यहाँ तक कि सरकंडों में छिपा मगरमच्छ और दरियाई घोड़ा भी, अपना काम छोड़ कर उस नन्हीं लड़की का गाना सुनने लगे.

उससे थोड़ी दूरी पर एक आदमी, अपना ढोल लिए, ऊँची घास में बैठा उसका गाना सुन रहा था. अब अगर वह एक अच्छा आदमी होता तो चुपचाप गाना सुनता और फिर वहाँ से चला जाता. लेकिन वह एक अच्छा आदमी नहीं था. वह तो एक बुरा *ज़िमवी* था इसलिए उसके मन में एक बुरा विचार आया. जैसे ही सिल्ने ने अपना मटका लगभग पूरा भर लिया, वह आदमी चोरी-चोरी उसके पीछे आया और उसे उठा कर अपने ढोल में, जो उस लड़की से अधिक बड़ा था, बंद कर दिया.

इसके पहले कि वह चिल्ला पाती, उस आदमी ने कहा, "नन्हीं लड़की, तुम अच्छा गाती हो. अब मेरी बात ध्यान से सुनो. जब मैं ढोल बजाऊँगा तुम गीत गाना. जितना सुंदर और जितनी देर तक तुम गा सकती हो, तुम गाना. अगर तुम नहीं गाओगी तो ढोल को पीटने के बजाय मैं तुम्हें पीटूँगा."

सिल्ने डर गई थी, इसलिए उसने कहा कि वह वही करेगी जो वह कहेगा. उस आदमी ने अपना बड़ा ढोल जिसके अंदर नन्हीं लड़की थी उठाया और वहाँ से चला गया.

कुछ मील दूर एक गाँव में जब वह पहुँचा तब शाम हो चुकी थी. वह उस गाँव में रुक गया और उसने गाँव वालों से पूछा कि क्या वह एक रात वहाँ ठहर सकता था.

मुखिया ने कहा कि वह वहाँ रह सकता था. उस आदमी ने कहा कि वह ढोल बजा कर गाँव वालों के अतिथि-सत्कार का धन्यवाद करना चाहता था.

"डम! डम!" उसने ढोल को पीटा और सिल्ने गाना गाने लगी. वह गाती रही, गाती रही और गाँव वाले प्रसन्नता से उसका मधुर गाना सुनते रहे.

जब वह चुप हो गई तो वह चिल्लाये, "कृपया, अपना गाने वाला ढोल फिर बजाओ!"

लेकिन उस आदमी ने कहा, "मैं थक गया हूँ और मुझे भूख लगी है. अब कुछ खाये बिना मैं ढोल नहीं बजा सकता."

जब लोगों ने यह बात सुनी तो वह अपने-अपने बगीचों की ओर भागे. जो कुछ भी खाने को उन्हें मिला उससे उन्होंने अपनी टोकरियाँ भर लिया. उनमें बड़े, सुनहरी कद्दू थे, मोटी शकरकंदी थी, लाल बीन्स और केले थे. इन्हें पका कर वह उस आदमी के पास लाये. बकरी का ताज़ा दूध और शहद से बनी शराब भी लाये. वह तब तक खाता और पीता जब तक कि सारी अच्छी चीज़ें समाप्त नहीं हो गईं. फिर, "डम! डम!" उसने ढोल को दुबारा पीटा और सिल्ने फिर गाने लगी. वह गाती रही, गाती रही. आकाश में बहुत ऊपर चाँद दिखाई नहीं देने लगा. फिर वह लोरियाँ गाने लगी. जब तक गाँव वाले ऊघनें नहीं लगे तब तक वह गाती रही.

फिर जब सब लोग सोने के लिए चले गए, आदमी ने ढोल को ऊपर से खोला और अपने ढेर सारे खाने से बचीं पाँच ठंडी बीन्स उसने नन्हीं लड़की को दीं, हालांकि देर तक गाने के कारण उसे बहुत भूख लगी थी.

जब सुबह हुई तो अपना आश्चर्यजनक ढोल लेकर वह चला गया और एक दूसरे गाँव आ गया. पिछली रात की तरह वहाँ भी वैसा ही हुआ जैसा पिछले गाँव में हुआ था. लेकिन यहाँ पर लोगों ने उसके लिए मुर्ग़ी का शोरबा भी बनाया जो वह सारा पी गया और सिल्ने के लिए कुछ भी न छोड़ा. वह गाँव-गाँव घूमता रहा और जहाँ भी वह गया वहाँ सब कुछ वैसे ही हुआ जैसा पहले गाँव में हुआ था. किसी ने भी एक ढोल को इतना सुंदर गाते न सुना था, इसलिए जहाँ भी वह गया लोगों ने खाने के लिए उसे अच्छे-अच्छे पकवान और व्यंजन दिये.

लेकिन इन में से थोड़ी सी चीज़ें भी क्या वह बेचारी नन्हीं लड़की को खाने के लिए देता था? नहीं, वह कभी न देता था; वह तो उसे खाने के लिए बस उतना ही देता था जितने से उसकी आवाज़ कमज़ोर या धीमी न हो जाये....चार या पाँच ठंडी बीन्स या कद्दू के थोड़े से बीज.

जब सिल्ने अपने घर न वापस आई तो उसके माता-पिता उसको ढूँढते हुए नदी किनारे आए. लेकिन लड़की का कोई चिन्ह भी उन्हें दिखाई न दिया-सिवाय उसके बड़े मटके के जो लगभग पूरा भरा हुआ था. नदी किनारे बैठा मगरमच्छ उन्हें देख रहा था और उन्होंने उससे पूछा कि क्या वह उनकी नन्हीं लड़की को खा गया था. लेकिन उसने अपना सिर हिलाया और पानी में तैरता हुआ वहाँ से चला गया.

एक जिराफ पेड़ों के ऊपर के पत्ते चबा रहा था. उन्होंने उससे कहा, "ओ जिराफ....तुम अपनी लंबी गर्दन के कारण दूर तक देख सकते हो....क्या तुम ने हमारी नन्हीं लड़की को देखा है?"

लेकिन जिराफ ने अपना सिर हिलाया और पत्ते खाता रहा.

उन्होंने घास में बैठे हुए शेर से पूछा, "हमारी नन्हीं लड़की कहाँ है-सिल्ने जो बहुत ही मधुर गाती है? क्या तुम ने उसे खा लिया है?"

लेकिन शेर ने अपना सिर हिलाया और भाग गया.

माता और पिता आगे, और आगे चलते गए. फिर उनकी भेंट एक हाथी के साथ हुई.

"ओ हाथी...अपने विशाल कानों से...क्या तुमने हमारी खोयी हुई नन्हीं लड़की की कोई सूचना सुनी है?"

लेकिन हाथी ने मायूसी से अपना सिर हिलाया और धीरे-धीरे आगे चला गया.

फिर उनकी भेंट एक लकड़बग्घे से हुई; एक गंदे और अप्रिय जानवर से.

"लकड़बग्घे, क्या तुम्हें पता है कि हमारी नन्हीं लड़की-सिल्ने-जो इतना मधुर गाती है-कहाँ है?"

लेकिन लकड़बग्घा सिर्फ हँसता रहा-एक भद्दी, चिढ़ाने वाली हँसी. और वह भी वहाँ से खिसक गया.

सप्ताह के बाद सप्ताह बीतता गया. सिल्ने के माता-पिता यहाँ-वहाँ भटकते रहे, हर जगह अपनी बेटी के बारे में पूछते, लेकिन किसी ने भी उसे न तो देखा था और न उसके बारे में कुछ सुना था. जंगल से मैदान और एक गाँव से दूसरे गाँव यात्रा करते-करते वह निराश और मलिन हो गए थे, लेकिन उनकी नन्हीं लड़की उन्हें न मिली.

एक शाम थके हुए और भूखे वह एक गाँव में पहुँचे. उन्होंने लोगों से वहाँ रात बिताने की अनुमति माँगी. लोगों ने उनका स्वागत किया और बताया कि एक अन्य अजनबी भी उस रात गाँव में ठहरा हुआ था. लेकिन गाँव में उनके लिए भी जगह थी. अजनबी वही आदमी था जिसके पास गाने वाला ढोल था.

“डम! डम!” उसने ढोल बजाया और ढोल गाने लगा.

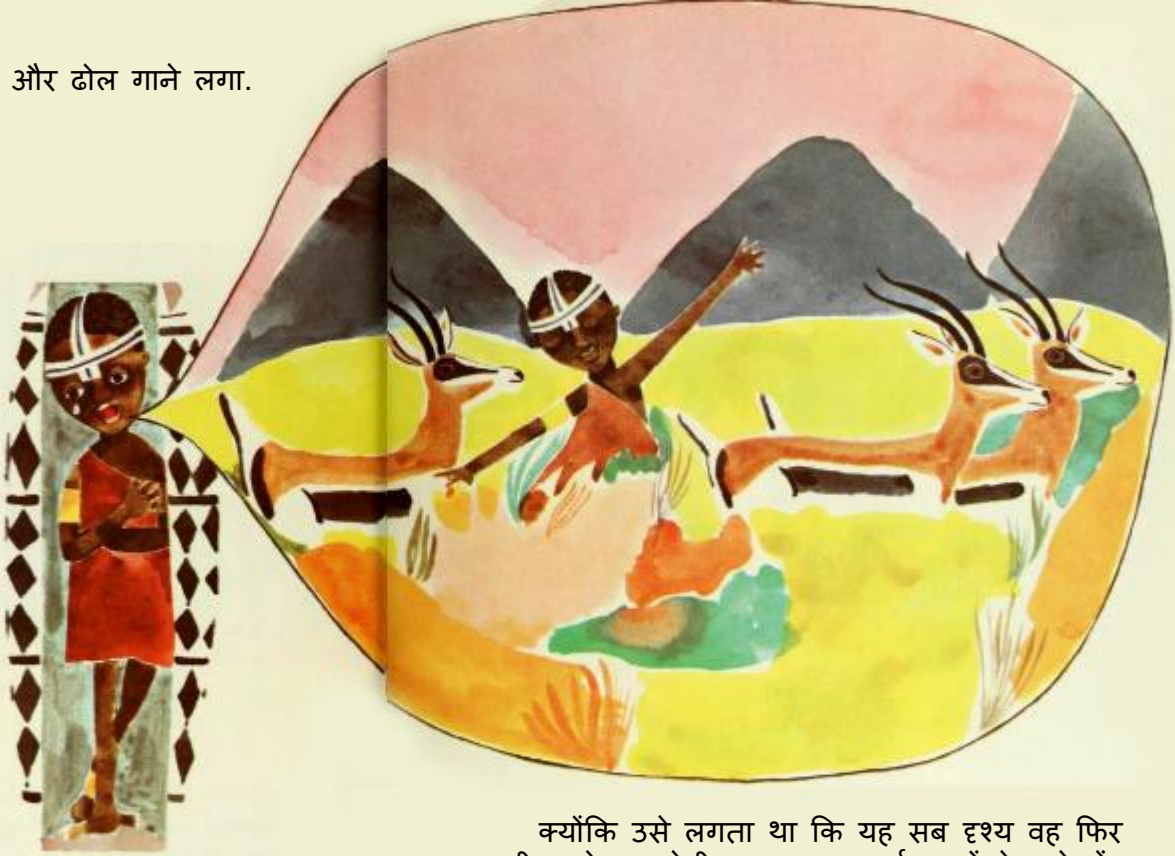

ढोल के अंदर बंद सिल्ने उन सुंदर दृश्यों के बारे में गाने लगी जो उसने तब देखे थे जब वह ढोल के बाहर सुनहरी धूप में रहती थी....ऊँची घास के बीच में से भागते हुए छोटे हिरणों के बारे में...नवजात बकरी के बच्चों की धीमी चीखों के बारे में और आकाश को छूते नीले पहाड़ों के बारे में.

क्योंकि उसे लगता था कि यह सब दृश्य वह फिर कभी न देख पायेगी, वह उल्लासपूर्ण दृश्यों के बारे में दुखद गीत गा रही थी. जितने भी मधुर गीत उसने गाये थे उन सबसे यह अधिक मधुर थे. सब लोग अपनी साँस रोक कर यह गीत सुन रहे थे.

सिवाय एक व्यक्ति के. जैसे ही सिल्ने ने गाना शुरु किया, ढोल बजाने वाले के पास बैठी उसकी माँ रोने लगी थी क्योंकि वह अपनी नन्हीं बेटी की आवाज़ पहचान गई थी. लेकिन उसके पिता ने माँ को घूर कर देखा, इसलिए उसने कुछ न कहा. कुछ कहने के बजाय वह चुपचाप बैठी रही और गाना सुनती रही. कई घंटों तक ढोल गाता रहा और हर गीत पहले गीत से अधिक सुंदर था.

जब गाना समाप्त हुआ-क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि बिना कुछ खाये वह और ढोल नहीं बजा सकता था-सब लोग उसके लिए जो कुछ भी उनके पास खाने को स्वादिष्ट था वह ले आए और वह खाता रहा, खाता रहा.

"मुझे प्यास लगी है!" जब उसने दस लोगों के बराबर खाना खा लिया तो उसने कहा, और लोग मटकों में भर कर शहद से बनी शराब ले आए. वह शराब पीता रहा, पीता रहा, पीता रहा. सिल्ने का पिता उसके निकट बैठ कर उसके अद्भुत ढोल के लिए उसकी झूठी प्रशंसा करने लगा और उसे और खाने और शराब पीने के लिए उकसाने लगा.

आखिरकार जब उसने उतनी शराब पी ली जितनी बीस आदमी पीते हैं, उसने ज़ोर की जम्हाई ली और गहरी नींद सो गया. गाँव के सब लोग सोने के लिए अपने-अपने घरों में चले गए, लेकिन सिल्ने के माता-पिता सोने का नाटक करने लगे. जब उन्हें विश्वास हो गया कि सब सो गए थे और ढोल बजाने वाला शेर की दहाड़ से भी ऊँची आवाज़ में खर्राटे ले रहा था, वह रेंगते हुए उसके पास आए. चुपके से, बिना शोर किए, उन्होंने ढोल को ऊपर से खोल लिया और उसके भीतर झाँका. भीतर उनकी नन्हीं लड़की थी, छोटी और पतली और अकेली और डरी हुई.

"बाहर आओ, बाहर आओ," उन्होंने फुसफुसाया, और उसे कसकर पकड़ा.

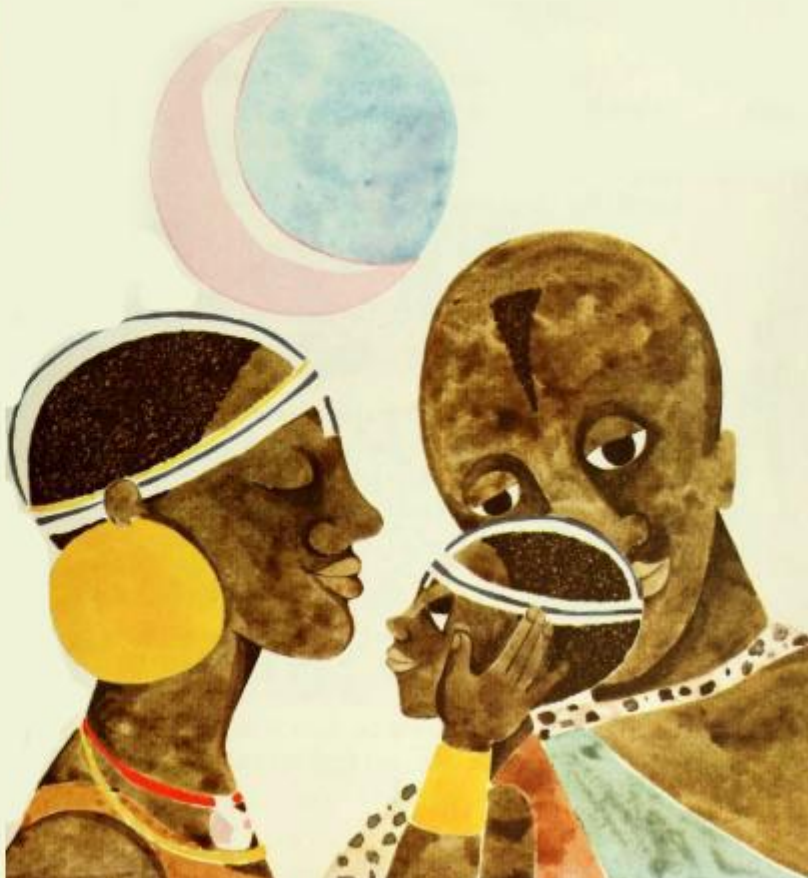

फिर पिता ने आग में एक लकड़ी जलाई और उसे लेकर चुपके से जंगल के अंदर चला गया.

एक बड़े और पुराने वृक्ष के पास वह जलती हुई लकड़ी ले आया. कुछ देर बाद वृक्ष के एक सुराख से बहुत सारी मधुमक्खियाँ बाहर आ गईं क्योंकि जलती हुई लकड़ी का धूँआ उन्हें अच्छा न लगता था.

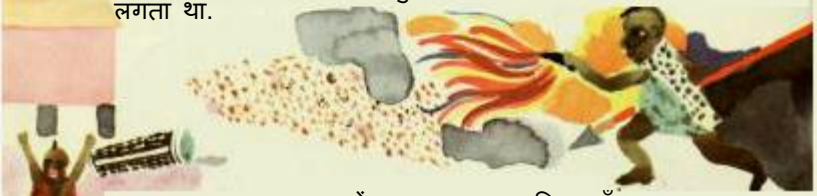

बाहर आकर उन्हें समझ न आया कि कहाँ जाना था, वह एक झुंड में यहाँ-वहाँ घूमने लगीं. आदमी ने जलती लकड़ी उनके निकट कर दी और, धुँये से बचने के लिए, वह उसके आगे-आगे उड़ने लगीं. इस तरह वह उन्हें, गाँव की ओर, उस आदमी के ढोल के निकट ले आया.

ढोल का सुराख मधुमक्खियों को एक पेड़ के सुराख जैसा ही लगा और वह ढोल के अंदर चली गईं. पिता ने झट से ढोल को ऊपर से बंद कर दिया और मुस्कराया.

फिर सारा परिवार सो गया.

सुबह हुई और जब सब नींद से जाग गए तो लोगों ने उससे अपना ढोल फिर से बजाने का अनुरोध किया. किसी ने उस नन्हीं लड़की की ओर ध्यान नहीं दिया जो अब वहाँ थी, क्योंकि ढोल के सुंदर गीतों के अतिरिक्त वह कोई बात न सोच रहे थे.

"प्लीज़, प्लीज़," वह बार-बार उससे विनती करने लगे. "जाने से पहले हमें एक बार फिर उसका संगीत सुनाओ."

और उस आदमी ने अपने पेट को मला और कहा, "अगर मैंने नाश्ता किया होता तो मैं बहुत बढ़िया ढोल बजाता!"

लोगों ने वचन दिया कि जितना भोजन वह रात में लाए थे उससे अधिक खाना वह उसके लिए लायेंगे और साथ में कई उपहार भी देंगे, अगर उनके बगीचों में जाने से पहले वह एक छोटा सा गीत सुना दे. घरों में सारा खाना समाप्त हो गया था और अब खाने का सामान लाने के लिए उन्हें बगीचों में जाना था.

वह एक छोटा गीत सुनाने के लिए तैयार हो गया

"डम! डम!" उसने ढोल बजाया लेकिन कुछ न हुआ.

"धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम!" क्रोध में उसने फिर से ढोल को पीटा.

कुछ न हुआ और कुछ लोग उस पर हँसने लगे.

"धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम! धड़ाम!" उसने बार-बार ढोल पीटा लेकिन कुछ न हुआ... कुछ भी नहीं. अब तक सब लोग उस पर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे थे. फिर उसने अपना ढोल ज़मीन पर फेंक दिया और उसे ठोकर मारने लगा और उस पर चिल्लाने लगा, लेकिन ढोल चुप ही रहा.

आखिरकार उसने अपना ढोल उठाया और गुस्से में ढोल पर चिल्लाते हुए गाँव से भाग गया, "मैंने तुम से कहा था कि अगर तुम न गाओगी तो मैं तुम्हें पीटूँगा- और अब मैं वही करूँगा!"

इतना कह कर सिल्ने की पिटाई करने के लिए उसने ढोल के चमड़े को एक ओर से फाड़ डाला-अरे यह क्या हुआ!

अचानक मधुमक्खियाँ ढोल से बाहर आईं..... बहुत सारी!

“हम्म्म्म्म्म्म्म.....म्म्म्म” और वह उस आदमी के पीछा करने लगीं और वह फिर कभी वहाँ दिखाई न दिया.

उन लोगों के काम पर बगीचों में जाने से पहले सिल्ने ने उन्हें एक सुंदर प्रसन्नता से भरा गीत सुनाया. सब ने उसे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीज़ें दीं (क्योंकि ढोल के अंदर इतने समय तक रहने के कारण उसे बहुत भूख लगी थी) और साथ में एक सुंदर हार दिया. फिर वह और उसके माता और पिता घर की ओर चल पड़े.

कहानी के विषय में

दक्षिण अफ्रीका के बंटू जाति के लोगों में उन पेटू नरभक्षियों की कहानियाँ प्रचलित हैं जिन्हें वह लोग ज़िमवी कहते हैं. यह कहानी भी एक ऐसे ही ज़िमवी की है जिसका अलग-अलग कबीलों के लोग अलग-अलग रूपों में वर्णन करते हैं. काल्पनिक ज़िमवी की कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन के लिए सुनाई जाती हैं, जबकि अफ्रीका की अधिकतर लोक-कथायें धार्मिक या उपदेश-युक्त होती हैं. ज़िमवी कोई भी रूप धारण कर सकता है और अपनी असाधारण भूख मिटाने के लिए कई छल करता है; कभी वह राक्षस बन जाता है, कभी एक टाँग वाला, वह अफ्रीका का सबसे बुरा पशु लकड़बग्घा भी बन जाता है, और जैसा कि इस कहानी में होता है, कभी-कभी वह एक आम आदमी बनने का ढोंग करता है- लेकिन वह सबसे लालची होते हैं.